❋ 6 जुलाई 2014 (1-4-78) की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] हर समय बाप और सेवा में मगन रहने वाले, सदा श्रेष्ठ मर्यादाओं की लकीर से संकल्प में भी बाहर न निकलने वाले मर्यादा पुरूषोत्तम, ऐसे बच्चे जो सदा हर सेकण्ड, हर संकल्प में जन्म-जन्म साथ रहते हैं। जो अभी बाप से वायदा निभाते हैं कि तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से हर सेकण्ड हर कर्म में साथ निभाऊं, ऐसे वायदे को निभाने वाले सपूत बच्चों को बाप भी जन्म-जन्मान्तर साथी भव का वरदान अभी देते हैं।

2] साकार बाप के साथ भिन्न नाम रूप से पूज्य में भी साथी और पुजारीपन में भी साथी। ज्ञानी तू आत्मा बनने में भी साथी और भक्त आत्मा बनने में भी साथी। ऐसे सदा साथी का वा ततत्वम् का वरदान ऐसी विशेष आत्माओं को अभी प्राप्त होता है।

3] अभी की स्टेज (अवस्था) और भविष्य स्टेज में और हर सेकण्ड साथीपन का अनुभव जन्म-जन्मान्तर भी नाम रूप सम्बन्ध से साथ के अनुभव के निमित्त बनेंगे। विक्रमाजीत बनने में भी साथी होंगे। इसका विक्रम (विक्रमादित्य) बनने के समय भी साथी।

4] हर पार्ट हर वर्ण में साथ-साथ होंगे। इसका ही गायन है साथ जियेंगे, साथ मरेंगे अर्थात् साथ चढ़ेंगे, साथ गिरेंगे। चढ़ती कला, उतरती कला, दिन और रात, दोनों में निरन्तर योगी, निरन्तर साथी। जितना अभी संगम पर साथ निभाने में सम्पूर्ण हैं। उतना ही समीप के सम्बन्धी बनने में भी समीप होते हैं। विश्व की नम्बरवन श्रेष्ठ आत्मा का भी ड्रामा के अन्दर महत्व है। ऐसे नम्बरवन आत्मा के सदा सम्बन्ध में रहने वाली आत्माओं को भी महत्व हो जाता है। जैसे आजकल भी अल्पकाल के स्टेट्स को पाने वाली आत्मायें कोई प्रेजीडेण्ट या प्राइम मिनिस्टर बनती हैं तो उनके साथ उनकी फैमिली का भी महत्व हो जाता है। तो सदाकाल की श्रेष्ठ आत्मा के सम्बन्ध में आने वाली आत्माओं का महत्व कितना ऊंचा होगा। अभी थोड़ी सी हलचल होने दो फिर देखना आदि पुरानी आत्मायें जो सदा साथ का सम्बन्ध निभाती आई हैं, उन्हों का कितना महत्व होता है। जैसे पुरानी वस्तु का महत्व रखते हैं, वैल्यु समझते हैं वैसे आप आत्माओं की वैल्यु का वर्णन करते-करते गुणगान करते-करते स्वयं को भी धन्य अनुभव करेंगे।

5] जितना आप बाप के गुण गाते हो उतना ही रिटर्न में ऐसी आत्माओं के गुणगान करेंगे। अभी क्यों नहीं गुणगान करते हैं? सेवा अभी करते हो लेकिन सम्पूर्ण फल अन्त में क्यों मिलता है? अभी भी मिलता है लेकिन कम। उसका कारण जानते हो? अभी कभी-कभी बाप और आपको कहीं मिक्स कर देते हो। बाप के गुण गाते-गाते अपने आपके भी गुण गाने शुरू कर देते हो। भाषा बड़ी मीठी बोलते हो लेकिन मैं-पन का भाव होने के कारण आत्माओं की भावना समाप्त हो जाती है। यही सबसे बड़े से बड़ा अति सूक्ष्म त्याग है। इसी त्याग के आधार पर नम्बरवन आत्मा ने नम्बरवन भाग्य बनाया और अष्ट रत्न नम्बर का आधार भी यही त्याग है।

6] फिर यह पांचों तत्व सदा सब प्रकार की सफलताओं की माला पहनायेंगे। अब तक तो तत्व भी सेवा में कहीं-कहीं विघ्न रूप बनते हैं। लेकिन स्वाहा की आहुति देने से आरती उतारेंगे। खुशी के बाजे बजायेंगे। सब आत्मायें अपनी बहुत काल की इच्छाओं का प्राप्ति करते हुए महिमा के घुंघरू पहन नाचेंगी। तब तो अन्तिम भक्ति के संस्कार मर्ज होंगे। ऐसी भक्त आत्माओं को भक्त-पन का वरदान भी अभी ही आप इष्टदेव आत्मा द्वारा मिलेगा। कोई को भक्त तू आत्मा का वरदान, कोई को आत्म ज्ञानी भव का वरदान। सर्व आत्माओं को अभी वरदानी बन वरदान देंगे। सकामी (वासना युक्त) राज्य करने वालों को राज्य पद का वरदान देंगे। ऐसे वरदानीमूर्त, कामधेनु आत्मायें बने हो? जो आत्मा जो मांगे तथास्तु। ऐसी आत्माओं को सदा समीप और साथी कहा जाता है।

...2

[2]

7] अभी मेहनत, एनर्जी और मनी भी लगानी पड़ती है फिर यह दोनों का काम यह प्युरिटी की पर्सनैलिटी ही करेगी।

8] संगठन करता अच्छा है, संगठन से भी उमंग-उल्लास बढ़ता है।

9] आप ब्राह्मण बेहद के सन्यासी वा त्यागी हो। आप त्याग मूर्तियों ने अपने इस पुराने घर अर्थात् पुराने शरीर, पुराने घर अर्थात् पुराने शरीर, पुराने देह का भान त्याग किया है, संकल्प किया कि बुद्धि द्वारा फिर से कभी इस पुराने घर में आकर्षित नहीं होंगे इसलिए तो कहते हो देह सहित देह के सम्बन्ध का त्याग। त्याग का पहला कदम है– देह के भान का त्याग अर्थात किनारा। तो इस देह रूपी घर में जो भिन्न भिन्न कर्मेन्द्रियां है उनकी आकर्षण का भी त्याग।

10] त्याग का अर्थ है जिस चीज को वा बात छोड़ दिया, अपने-पन से किनारा कर लिया, तो उससे अपना अधिकार समाप्त हुआ। जिसके प्रति त्याग किया वह वस्तु उसकी हो गई। उसका फिर संकल्प भी नहीं कर सकते, क्योंकि त्याग की हुई बात, संकल्प द्वारा प्रतिज्ञा की हुई बात फिर से वापिस नहीं ले सकते हैं।

❁ योग-

1] अमृतवेले उठते ही स्मृति में लाओ कि मैं फरिश्ता हूँ। ब्रह्मा बाप को यही दिलपसन्द गिफ्ट दो तो रोज़ अमृतवेले बापदादा आपको अपनी बांहो में समा लेंगे, अनुभव करेंगे कि बाबा की बाहों में, अतीन्द्रिय सुख में झूल रहे हैं। जो फरिश्ते स्वरूप की स्मृति में रहेंगे उनके सामने कोई परिस्थिति वा विघ्न आयेगा भी तो बाप उनके लिए छत्रछाया बन जायेंगे। तो बाप की छत्रछाया वा प्यार का अनुभव करते विघ्न जीत बनो

❁ धारणा-

1] हर महारथी को स्वयं को चेक करना है कि वर्तमान समय बापदादा के गुणों, नॉलेज और सेवा में समानता और साथीपन कहाँ तक है? समानता ही समीपता को लायेगी।

2] हर सेकण्ड, हर संकल्प में बाबा-बाबा या रहे, मैं-पन समाप्त हो जाए। जब मैं नहीं, तो मेरा भी नहीं। मेरा स्वभाव, मेरे संस्कार हैं, मेरी नेचर है, मेरा काम या ड्यूटी, मेरा नाम, मेरी शान, मैं-पन में यह मेरा-मेरा भी समाप्त हो जाता है। मैं-पन समाप्त हुआ– यही समानता और सम्पूर्णता है। स्वप्न में भी मैं-पन न हो, इसको कहा जाता है, अश्वमेध यज्ञ में मैं-पन के अश्व को स्वाहा करना। यही अन्तिम आहुति है और इसी के आधार पर ही अन्तिम विजय के नगाड़े बजेंगे।

3] पर्सनैलिटी मनुष्य को अपने तरफ आकर्षित करती है। तो वर्तमान समय की पर्सनैलिटी कौन सी चाहिए? प्युरिटी ही पर्सनैलिटी है। जितनी-जितनी प्युरिटी होगी तो प्युरिटी की पर्सनैलिटी स्वयं ही सर्व के सिर झुकायेगी। जैसे ड्रामा के अन्दर सन्यासियों के आगे भी सिर झुकाते हैं, प्युरिटी की पर्सनैलिटी के कारण। प्युरिटी की पर्सनैलिटी बड़े-बड़े लोगों के भी सिर झुकाती है। तो वर्तमान समय प्युरिटी की पर्सनैलिटी के आधार पर सिर झुकेंगे। जैसे अगरबत्ती की खुशबू खैंचती है ना, वैसे आने से ही प्युरिटी की खुशबू अनुभव हो। जहाँ देखें वहाँ प्युरिटी ही प्युरिटी नज़र आये। वर्तमान समय इसी का ही अनुभव करना चाहते हैं। जो चारों ओर नज़र नहीं आती। चाहे कितना भी महान आत्मा हो, नाम है लेकिन प्युरिटी के वायब्रेशन्स् नहीं है क्योंकि वह सिद्धि के नाम, मान, शान को स्वीकार कर लेते हैं इसलिए प्युरिटी का वायब्रेशन कहीं नहीं आता है। अल्पकाल की प्राप्ति की आकर्षण होती है लेकिन प्युरिटी की आकर्षण नहीं होती है। अभी प्रैक्टिकल जीवन में यह प्युरिटी की पर्सनैलिटी चाहिए, जो पर्सनैलिटी स्वयं ही आकर्षित करे।

...3

[3]

4] धर्मात्माओं को आकर्षित करने वाली भी यह पर्सनैलिटी है। वह अनुभव करें कि जो हमारे पास चीज़ नहीं है वह यहाँ है। नहीं तो समझते हैं– हाँ कन्यायें मातायें हैं, काम अच्छा कर रही हैं, इसी भावना से देखते हैं लेकिन पर्सनैलिटी समझकर सामने आयें कि यह विश्व की बड़े से बड़ी पर्सनैलिटी हैं। समझा कुछ और था, देखा कुछ और – ऐसे अनुभव करें। जो हमारी बुद्धि में बात नहीं है वह इन्हों के प्रैक्टिकल जीवन में है। यह है महारथी को नीचे गिराना। जैसे चींटी हाथी को गिरा देती है ना। तो इस पर्सनैलिटी में झुक जायें। अभी स्वयं का स्वरूप सर्व प्राप्तियों के चुम्बक का स्वरूप चाहिए, जो स्वयं ही सब आकर्षित हों। जहाँ देखें, जिसको देखें प्राप्ति का अनुभव हो। तो प्राप्ति ही चुम्बक है और सर्व प्राप्ति स्वरूप ही चुम्बक है।

5] अभी अपने वायब्रेशन द्वारा जो हैं जैसे हैं वैसे नज़र से देखने का वायब्रेशन फैलाओ और अपनी वरदानी, महादानी वृत्ति से वायब्रेशन और वायुमण्डल को परिवर्तन करो। अभी तक बिचारे तड़पते हुए ढूंढते रहते हैं कि कहाँ जावें। प्यासी आत्माओं को अभी सागर वा नदियों के सही स्थान का परिचय नहीं मिला है इसलिए ढूंढते ज्यादा हैं। तो अपने लाईट हाऊस स्वरूप से मंजिल का रास्ता दिखाओ।

6] कोई भी कर्मेन्द्रिय अपने तरफ आकर्षित न करे। इस पुरानी देह को बापदादा द्वारा मिली हुई अनामत समझो। यह मेरी देह नहीं लेकिन सेवा अर्थ अमानत है। जैसे मेहमान बन देह में रह रहे हैं। तो मेरे-पन का त्याग कर मेहमान समझ इसे महान कार्य में लगाओ। जब देह के भान का त्याग हो जाता है तो दूसरा है देह के सर्व सम्बन्ध का त्याग। जब देह का भान छूट जाता है तो आत्मा, देही व मालिक बन मन और तन से सदा हर्षित रहती है। कभी मन से व चेहरे से उदास नहीं हो सकते। उदास होना यह दास पन की निशानी है। देह के साथ लौकिक तथा अलौकिक सम्बन्ध में महात्यागी अर्थात् नष्टोमोहा बनो। नष्टोमोहा की निशानी है– न किसी में घृणा होगी, न किसी में लगाव वा झुकाव होगा।

7] अगर किसी से घृणा है तो उस आत्मा के अवगुण वा आपके दिलपसन्द न करने वाले कर्म बार-बार आपकी बुद्धि को विचलित करेंगे। **याद बाप को करेंगे और सामने आयेगी वह आत्मा। लगाव वाली आत्मा गुण और स्नेह के रूप में बुद्धि को आकर्षित करती है। तो इस कर्म के बन्धन का भी त्याग करो।**

8] ब्राह्मण बनना अर्थात विकल्पों और विकर्मों का त्याग करना। ब्राह्मण साधारण कर्म भी नहीं कर सकते, विकर्म कीतो बात ही नहीं। तो कर्मेन्द्रियों का जो कर्म के साथ सम्बन्ध है– उस कर्म के हिसाब से विकर्म का त्याग। विकर्म के त्याग बिना सुकर्मी वा विकर्माजीत नहीं बन सकते। इसलिए व्यर्थ का भी त्याग क्योंकि व्यर्थ बोल भी समर्थ बनने नहीं देंगे। अगर विकर्म नहीं किया लेकिन व्यर्थ कर्म भी किया तो वर्तमान और भविष्य जमा नहीं होगा।

❁ **सेवा-**

1] संगठन रूप में इस अन्तिम आहुति का दिल से आवाज फैलाओ।